डॉ. अनु कुमारी डिपार्टमेंट ऑफ हिस्ट्री सेमेस्टर 1mjc date 10/11/2025

प्राचीन भारतीय शिक्षा (वेदकालीन शिक्षा)

प्राचीन भारतीय शिक्षा का इतिहास वेदकाल से आरम्भ होता है। प्राचीन शिक्षा का आधार वेद थे। बौद्धकाल के प्रारम्भ होने के पहले वाले सम्पूर्णकाल को वैदिककाल की संज्ञा दी जाती है। विद्वानों का मत है कि विश्व में सर्वप्रथम भारत में शिक्षा की व्यवस्था की गई थी।

वेद संस्कृत के "विद्" धातु से बना है इसका अर्थ है "ज्ञान" अर्थात् वेद का शाब्दिक अर्थ है ज्ञान का बोध कराने वाला वेद चार हैं :-

1) ऋग्वेद
2) सामवेद
3) यजुर्वेद
4) अथर्ववेद

आश्रम (4)

ब्रह्मचर्य	(0-25)	- Learn	अर्थ
गृहस्थ	(26-50)	- Earn	धर्म
वानप्रस्थ	(51-75)	- Turn	काम
संन्यास	(76-100)	- Return	मोक्ष

वैदिक युग में शिक्षा को अत्याधिक महत्व दिया जाता था आर्यों का विश्वास था कि शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति के सर्वांगीण विकास शारीरिक, आर्थिक, आध्यात्मिक, सामाजिक विकास हो सकता है। शिक्षा को प्रकाश का स्त्रोत माना गया है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में मार्गदर्शन करती है ज्ञान से मनुष्य के अंतरचक्षु खुल जाते हैं अतः ज्ञान को मनुष्य का तीसरा नेत्र माना गया है

" ज्ञानम् मनुजस्य त्रितयम् नेत्रम् "

पात्रत्वात् धनमाप्नोति, धनाद्धर्मं ततः सुखम्

न चौरहार्यं न च राजहार्यं न भ्रातृभाज्यं
न च भारकारी, व्यये कृते वर्धत एव नित्यं
विद्या धनं सर्वधनप्रधानम्

Not heavy to carry (न ही भारी कोई भार है)

इस काल में अशिक्षित व्यक्ति समाज के लिए कलंक माना जाता है|

"विद्या विहिन पशु"

अतः माता-पिता का कर्तव्य है कि वो बच्चों को शिक्षित करे|

"माता शत्रु पिता वैरी येन बालो न पठितः
न शोभते सभा मध्ये हंस मध्ये बको यथा"

वैदिक शिक्षा के उद्देश्य :-

① ईश्वर भक्ति तथा धार्मिकता का विकास :-
(Infusion of spiritual & religious values) आध्यात्मिक वातावरण में धार्मिकता का विकास प्राचीन भारतीय शिक्षा का सर्वप्रमुख और सर्वप्रथम उद्देश्य था शिक्षा द्वारा नई पीढ़ी को आत्मा की अमरता तथा श्रेष्ठता का आभास कराया जाता था इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए बालक में धार्मिक आस्था एवं भावना का विकास किया जाता था जैसा कि वेदो के तत्व ज्ञान को समाहित करने वाली गीता में वर्णित है|

"सा विद्या या विमुक्तये"
अर्थात् विद्या वही है जो मनुष्य को मुक्ति प्रदान करती है धार्मिकता का विकास

स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान सर्वत्र पूज्यते

→ अलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम्
अधनस्य कुतो मित्रम्, अमित्रस्य कुतः सुखम्

करने के लिए शिक्षा में अनेक व्यवस्थाएं थी जिनमे प्रमुख निम्न हैं :-

a) प्रातः काल उठने पर विद्यार्थी ईश्वर स्मरण करते थे तथा सोने से पहले भी ईश्वर स्मरण करते थे|

b) समय-समय पर धार्मिक व्रतों का पालन अपने सामर्थ्य अनुसार करते थे|

c) धार्मिक अनुष्ठान एवं धार्मिक उत्सव समय-समय पर होते थे|

② सच्चरित्रता का विकास :- (Character develop.)

If wealth is loss nothing is loss,
If health is loss something is loss,
but If character is loss everything is loss,

उस काल में उच्च चरित्र को ज्ञान से भी अधिक महत्व दिया जाता था ऐसी धारणाएं प्रचलित थी कि वेदो के ज्ञाता किन्तु चरित्रहीन ब्राह्मण से अज्ञानी किन्तु चरित्रवान व्यक्ति अधिक श्रेष्ठ है| ब्रह्मचार्य, सत्यभाषण, गुरुसेवा, बड़ो का सम्मान, पराई वस्तुओ का न ग्रहण करना सच्चरित्रता के लक्षण माने जाते है इसके विकास के लिए प्रमुख व्यवस्थाएं निम्न थी :-

1) गुरु सच्चरित्र का आदर्श अपने जीवन द्वारा विद्यार्थियों के समक्ष रखते थे गुरुकुलों में विद्यार्थियों की संख्या कम होने के कारण

गुरु स्वयं प्रत्येक विद्यार्थी के चरित्र पर ध्यान रख सकते थे।

2) विद्यालय प्राय: नगरो से दूर शान्त वातावरण में हुआ करते थे गाँव से विद्यार्थियों का संपर्क कम रहता था इसके परिणामस्वरूप समाज के ऐसे व्यक्ति के सम्पर्क से विद्यार्थी प्राय: दूर रहते थे जिनका चरित्र निम्नस्तर का हो।

3) ब्रह्मचर्य व्रत पालन में जो वस्तुओ बाधक हो सकती थी उनसे विद्यालय को मुक्त रखा जाता था विद्यार्थीयों को केवल सात्विक भोजन एवं सात्विक वस्तु पहनने की आज्ञा थी।

4) चरित्र निर्माण के उपदेश दिए जाते थे विद्यार्थी ऐसे ग्रन्थ पढ़ा करते थे जिससे चरित्र निर्माण हो और दुष्ट चरित्रता पर कठोर दण्ड दिया जाता था।

(Development of personality)

③ व्यक्तित्व का विकास :- शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक सभी पक्षों के सन्तुलित विकास द्वारा बालक के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करना वैदिक शिक्षा का तीसरा उद्देश्य था व्यक्तित्व का अभिप्राय केवल वेश-भूषा एवं शरीर की सजावट न होकर मानवीय गुणों का विकास था व्यक्तित्व के प्रमुख तत्व निम्न प्रकार थे –

a) आत्मसम्मान
b) आत्मविश्वास
c) आत्मनियंत्रण

(Chittvridhhi Nirodh)

④ चितवृत्तियों का निरोध :- वैदिक काल में शिक्षा का आधार चितवृत्तियों का निरोध करना था उस समय शरीर की अपेक्षा आत्मा को अधिक महत्व दिया जाता था क्योंकि शरीर नश्वर आत्मा अमर है अत: आत्मा के उत्थान के लिए जप, तप, योग पर विशेष बल दिया जाता था ताकि उसका मोक्ष की प्राप्ति कर सके जिसे जीवन का चरमलक्ष्य समझा जाता था।

(Obidience of civic duties)

⑤ सामाजिक कर्तव्यों का पालन :- ब्रह्मचर्य आश्रम के पश्चात् गृहस्थ पालन के कर्तव्यों का ज्ञान दिया जाता था ताकि छात्र समाज में प्रवेश करके अपना जीवन सुखी बना सके परिवार के सदस्यों का उत्तरदायित्व समझ सके तथा सामाजिक उत्थान के कार्यो में सक्रिय भाग ले सके।

अतिथि सत्कार करना सबका कर्तव्य था परोपकार को उत्कृष्ट एवं दूसरो को दुख देना को बुरा माना जाता था।

(Development of vocational skill)

⑥ व्यवसायिक कुशलता का उन्नयन :- वैदिक युग में शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य व्यवसाय एवं जीविका से सम्बन्धित विभिन्न कौशलो का ज्ञान प्रदान करना भी था कुछ लोगो का ऐसा विचार है कि वैदिक शिक्षा में केवल धर्म आध्यात्म और योग आदि कि

शिक्षा प्रदान कि जाती थी किंतु वास्तव में वैदिक शिक्षा में अर्थशास्त्र, भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, शिल्पकला, चिकित्सा आदि विषय भी सम्मिलित किए जाते थे इन विषयों के माध्यम से छात्रों को उनकी क्षमताओं एवं आवश्यकताओं के अनुसार कृषि, व्यापार, पशुपालन, शिल्प तथा अन्य प्रकार के व्यवसायिक कार्यों का भी ज्ञान कराया जाता था आश्रमों में इस प्रकार के समस्त कार्यों जैसे - कुटी का निर्माण, भोजन पकाना, पशुओं की देखभाल करना तथा सुरक्षा उपाय आदि छात्रों को स्वयं करने पड़ते थे इस प्रकार के कार्यों से उनमें स्वावलम्बन और भावी रोजगार में पर्याप्त सहायक होते थे।

(Regular practice of yoga & pranayam)

(7) योग एवं प्राणायाम का नियमित अभ्यास :- उस काल में योगासनों एवं प्राणायामों का अभ्यास आवश्यक माना जाता था जैसे-2 मनुष्य प्राणायाम का अभ्यास करता जाता है वैसे-2 प्रतिक्षण उसके जीवन से अशुद्धी का नाश होता जाता है। प्राणायाम से मन व इन्द्रियाँ दोषयुक्त होकर निर्मल हो जाती हैं।

(Preservation of culture & religion)

(8) धर्म व संस्कृति की रक्षा :- वैदिक युग में धर्म और संस्कृति का विशेष महत्व था शिक्षा व समस्त ज्ञान - विज्ञान धर्म पर आधारित थी अतः शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य वैदिक धर्म व संस्कृति कि रक्षा करना भी था उद्देश्य वैदिक धर्म व संस्कृति कि रक्षा करना भी था इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वेदो का अध्ययन, अध्यापन, वन्दना और वैदिक मंत्रो को कंठस्थ कराकर किया जाता था।

(9) ज्ञान प्राप्ति :- वैदिक युग में ज्ञान प्राप्ति को लेकर विशेष महत्व दिया जाता था ज्ञान को प्रकाश, अज्ञान को अंधकार माना जाता था चाणक्य नीति में कहा गया है -

"माता शत्रु पिता वैरी येन बालो न पाठित:"

अर्थात् वे माता - पिता अपने संतानो के शत्रु हैं जो उन्हें शिक्षा नहीं प्राप्त करवाते है गुरुकुलों में विद्या अध्ययन के दौरान प्रकृति, आत्मा, ईश्वर, इन्द्रिय यम नियम, ध्यान, प्राणायाम, व्याकरण, धर्म, सामाजिक व्यवहार, राजनीति, आदि से सम्बन्धित, ज्ञान प्रदान किया जाता था

(Health Edn)

(10) स्वास्थ्य एवं पराक्रम :- शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य स्वस्थ्य एवं बलिष्ठ शरीर का विकास करना भी था वैदिक ऋषियों का मानना था कि मोक्ष प्राप्त करने के लिए स्वस्थ्य एवं बलशाली शरीर के साथ

वर्ण	ऊपर	नीचे	मेखला	यज्ञोपवीत
B.	कृष्णसार मृग चर्म	सन	मूंज	कपास
K	रूरु मृग चर्म	रेशम	तांत / मुर्वा नामक तृण	सन
V	बकरे का चर्म	भेड़ के बालों का	सन	भेड़ के बाल

एक पवित्र मन भी होना चाहिए इसलिए गुरुकुल में कठोर ब्रह्मचर्य व्रत के पालन के साथ-2 योग, प्राणायाम, एवं आसनों को भी पर्याप्त महत्व दिया जाता था स्वास्थ्य के नियमों जैसे प्रातःकाल शीघ्र उठना नित्य कर्मों से निवृत्त होना, व्यायाम करना, सादा एवं पौष्टिक भोजन करना, इन्द्रियों पर नियंत्रण रखना तथा नियमित जीवन बीताते हुए समुचित निद्रा लेना आदि कार्य शिष्यों के लिए अनिवार्य होते थे।

To develop

(11) श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण करना !- यह वैदिक काल की शिक्षा पर सम्पूर्ण दृष्टि डाले तो यह कहा जा सकता है कि उसका सम्पूर्ण लक्ष्य धार्मिक, आध्यात्मिक, नैतिक और सदाचारी व्यक्तियों के रूप में स्वस्थ्य बुद्धिमान, पराक्रमी और कर्तव्यपरायण, नागरिकों का निर्माण करना था छात्रों को आत्मनिर्भर, स्वाभिमानी धैर्यवान और परोपकारी बनाना इस युग की शिक्षा की एक और अनिवार्य आवश्यकता थी।

वैदकालीन शिक्षा की विशेषताए !-

a) उपनयन संस्कार !- उपनयन का अर्थ है "पास ले जाना" अतः इस संस्कार में विद्यार्थी को विद्याग्रहण करने के लिए गुरु के पास ले जाया जाता था गुरु अपने भावी शिष्य के घरेलु वस्त्र बदलकर उसे ब्रह्मचर्य की वेशभूषा धारण करने के लिए प्रदान करता था कोई भी शुभ दिन उपनयन संस्कार के लिए निश्चित किया जा सकता था आचार्य उपनित बालक से पूछता था "कस्य ब्रह्मचारी असि:" अर्थात् तुम किसके ब्रह्मचारी हो बालक "भवत:" अर्थात् आपका कहकर स्वयं को गुरु के प्रति समर्पित कर देता था उस दिन बालक विद्या की देवी 'सरस्वती' की विधिवत वंदना करता, गायत्री मंत्र का उच्चारण करता उसे यज्ञोपवित धारण कराया जाता था उपनयन के बाद बालक ब्रह्मचारी या अंतेवासी कहलाने लगता था तत् पश्चात् गुरु बालक को गुरुमंत्र से दिक्षित करते थे।

उपनयन संस्कार का उत्तरवैदिक काल में इतना अधिक महत्व बढ़ा कि इसे मनुष्य का दूसरा जन्म (द्विज) माना जाने लगा उपनयन संस्कार की आयु ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य के लिए क्रमशः 8, 11, 12 वर्ष थी आयु की पृथकता के बारे में विद्वान एक मत नहीं हैं उपनयन संस्कार के बाद ही शिक्षा का प्रारम्भ होता था।

b) अवधि !- विद्यार्थी जीवन प्रायः 12 वर्ष तक चलता था परन्तु वेदों के अध्ययन के लिए

लम्बे समय की आवश्यकता थी छान्दोग्य उपनिषद् में उल्लेख है "इन्द्र ने 101 वर्ष तक प्रजापति के यहाँ ज्ञान करने के लिए व्यतीत किए थे" प्रत्येक वेद के अध्ययन के लिए 12 वर्ष की अवधि निश्चित थी परन्तु थोड़े विद्यार्थी ही चारों वेदों का अध्ययन करते थे।

1) ऋग्वेद का ज्ञाता स्नातक
2) द्विवेद का ज्ञाता वसु
3) त्रिवेद का ज्ञाता रुद्र
4) चतुर्थ वेदों का ज्ञाता आदित्य

साहित्य तथा धर्मशास्त्र पढ़ने वाले छात्र अपना अध्ययन 10 वर्ष में समाप्त कर देते थे।

c) शिक्षण का समय :- शिक्षण के समय के बारे में प्राचीन ग्रन्थों में स्पष्ट संकेत नहीं है लिखित पुस्तकों के अभाव के कारण शिक्षण कार्य प्रातः एवं सायः दोनो समय हुआ करता था अध्ययन कार्य आचार्य की देखरेख में होता था महिने में कुछ छुट्टियाँ जैसे ~~संस्कृति~~ संक्रान्ति, पूर्णमासी, आदि और अन्य विशेष पर्वों पर होती थी तथा इन दिनो में अध्ययन नहीं किया जाता था।

d) स्थान :- विद्यार्थी अपनी शिक्षा दूर प्रकृति की गोद में प्राप्त करते थे स्वच्छ मौसम में विद्या किसी वृक्ष के नीचे प्रकृति के सानिध्य में गुरु के चरणों में बैठकर दी जाती थी परन्तु वर्षा आदि से बचने के लिए स्थायी अथवा अस्थायी प्रबन्ध अवश्य होता था प्रकृति से प्रत्यक्ष संबंध होने के कारण विद्यार्थी के मानसिक तथा शारिरीक विकास पर अत्यन्त स्वस्थ्य प्रभाव पड़ता था।

e) शिक्षण संस्थाएं :- प्राचीन काल में शिक्षा गुरुकुल में दि जाती थी छात्र अपने गुरु के साथ किसी आश्रम में रहते थे गुरुकुल प्रायः नगरो से दूर प्राकृतिक स्थल में बने होते थे जहां चरित्रवान व विद्वान गुरुओ के आश्रम में रहकर ज्ञान अर्जित करते थे और चरित्र निर्माण की शिक्षा प्राप्त करते थे।

f) गुरु शिष्य संबंध :- वैदिक काल में गुरु शिष्य के मध्य बहुत ही पवित्र और मधुर संबंध थे उनका संबंध परस्पर प्रेम और श्रद्धा पर आधारित था विद्यार्थी गुरु की सेवा करना अपना परम कर्तव्य समझते थे शिष्य गुरु से नीचे आसन पर बैठते थे तथा उनकी प्रत्येक आज्ञा का पालन करते थे गुरु को देवतुल्य समझा जाता था और ईश्वर के रूप में उनकी स्तुति की जाती थी।

"आचार्य देवो भवः"

अध्यापक विद्यार्थी से पिता तुल्य व्यवहार करते

थे और उन्हें अपने ही परिवार का सदस्य मानते थे संस्कृत में एक श्लोक में गुरु की महिमा इस प्रकार वर्णित की गयी है!-

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु

इस प्रकार गुरु भक्ति आध्यात्मिक उन्नति का एक महत्तम साधन थी थी गुरु शिष्य के स्वास्थ्य भोजन तथा वस्त्र की व्यवस्था करते थे शिष्य के समक्ष जीवन का आदर्श उपस्थित करते थे तथा उसकी शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास का ध्यान रखते थे।

गुरु का शिष्यों के प्रति कर्तव्य !-

1) शिष्य के स्वास्थ्य, भोजन एवं वस्त्र की व्यवस्था करना
2) शिष्य का मानसिक, शारीरिक तथा आध्यात्मिक विकास करना
3) शिष्य के दुर्गुणों को दूर करना और उनमें सद्गुणों का विकास करना
4) शिष्य की जिज्ञासाओं को शान्त करना
5) शिष्य की सभी प्रकार की समस्याओं का निराकरण प्रयास करना
6) शिष्य को भावी जीवन के योग्य बनाना व उसकी कुशलता की कामना करना तथा जीवन के लिए सतउपदेश देना।

शिष्य का गुरु के प्रति कर्तव्य !-

1) प्रातः काल गुरु का अभिवादन करना
2) गुरु की सेवा करना तथा जल, दातुन की व्यवस्था करना
3) यज्ञ के लिए लकड़ी की व्यवस्था, यज्ञ की अग्नि को सदैव प्रज्जवलित करना, गुरु की गाय चराना, खेतो में काम करना, भिक्षा मांगना, गुरु को समर्पित करके उसके आदेशानुसार भिक्षा में प्राप्त वस्तुओं का उपयोग करना।
4) गुरु की आज्ञा का पालन करना
5) अध्ययन समाप्त करने के पश्चात् गुरु के उपदेशों का पालन करना
6) सामर्थ्य अनुसार गुरु दक्षिणा देना

पाठ्यक्रम !- प्राचीन वैदिक काल में आध्यात्मिक तथा भौतिक दोनो प्रकार के पाठ्यक्रम प्रचलित थे, पाठ्यक्रम निम्नलिखित दो प्रकार के होते है —

(i) परा विद्या - धार्मिक साहित्य, वेदपुराण, उपनिषद्, आदि विषय थे।

(ii) अपरा विद्या - इतिहास, ज्योतिष, गणित, भौतिकशास्त्र, प्राणीशास्त्र, तर्कशास्त्र, आदि विषय सम्मिलित थे।

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षण विधि :- प्राचीन काल में सम्पूर्ण शिक्षा, मौखिक रूप से ही दी जाती थी छात्रों को समस्त ज्ञान कंठस्थ करना होता था उसके अलावा व्याख्यान विधि, अनुकरण, श्रवण विधि, चिन्तन, मनन, स्वाध्याय, शास्त्रार्थ, प्रश्नोत्तर, कथावार्ता, परिचर्चा विधि, का प्रयोग किया जाता था।

परीक्षा :- प्राचीन शिक्षा प्रणाली में नियम अनुसार, परीक्षा का कोई स्थान नहीं था नवीन ज्ञान देने से पूर्व गुरु यह जांच अवश्य कर लेते थे कि पिछला ज्ञान छात्र ने भलीभांति समझ लिया है या नहीं अध्ययन की समाप्ति पर कोई परीक्षा नहीं ली जाती थी गुरु को जब यह विश्वास हो जाता था की छात्र ने पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया है तभी छात्र की शिक्षा समाप्त की जाती थी परीक्षा के अभाव के साथ ही प्राचीन शिक्षा प्रणाली में उपाधि प्रदान करने की व्यवस्था नहीं थी।

अनुशासन :- यह प्राचीन शिक्षा की विशेषता थी कि अनुशासन के लिए अलग से कोशिश करने की आवश्यकता नहीं थी अध्यापकों के उच्च आदर्श व्यक्तित्व छात्रों में अध्यापकों के प्रति आदर सेवा और विनयशीलता की भावना घनिष्ठतम गुरु - शिष्य सम्बन्ध तथा गुरु द्वारा शिष्यों की आवश्यकताओं पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देने के कारण अनुशासन हीनता सम्बन्धी समस्याएं उत्पन्न ही नहीं पाती थी।

स्वास्थ्य शिक्षा :- प्राचीन शिक्षा व्यवस्था में शरीर और मस्तिष्क को दो अलग ईकाई नहीं समझा जाता था विद्यार्थी की ऐसी दिनचर्या निश्चित होती थी जिससे उसका शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य ठीक रहे, शारीरिक स्वच्छता के लिए विद्यार्थीयों का योगा, प्राणायाम इत्यादि करवाया जाता था।

व्यवहारिकता का समावेश :- प्राचीन काल में शिक्षा में व्यवहारिक पक्षों का पूर्णज्ञान रखा गया विभिन्न प्रकार कि क्रियात्मक शैक्षिक गतिविधियों कृषि तथा चिकित्सा आदि की शिक्षा इस तथ्य की ओर संकेत करती है इसी कारण प्रायोगिक शिक्षा पर बल दिया जाता था।

शिक्षा की प्रतिबंध रहित विशेष व्यवस्था :- प्राचीन शिक्षा की यह विशेषता थी कि राज्य को शिक्षा को स्वतंत्र स्थान दिया गया था शिक्षको को अति उच्च स्थान प्राप्त था गुरु का शिक्षा का सर्वोपरि केन्द्र था उसका जीवन आदर्शमय होता था वे महान ज्ञानी और वैरागी

होते थे जो समाज को कुछ देकर समाज से नाममात्र ही कुछ लेते थे उन पर न तो समाज की ओर से नियंत्रण था और न ही राज्य की ओर से।

निशुल्क शिक्षा व्यवस्था !- प्राचीन काल में शिक्षा पूर्णरूप से निःशुल्क दी जाती थी शिक्षा प्राप्ति के लिए छात्र के सामने कोई आर्थिक बंधन नहीं था प्रत्येक छात्र अपनी योग्यता व रुचि के अनुसार शिक्षा ग्रहण कर सकता था ब्राह्मण वर्ग का कार्य ही शिक्षा देना था गुरु दक्षिणा भेंट करना, छात्र की आर्थिक स्थिति पर निर्भर करता था गुरु दक्षिणा में शिष्य पुष्प, गाय, अश्व आदि भेंट दे सकता था अथवा सैकड़ो स्वर्ण मुद्राएं भी निशुल्क शिक्षा के साथ ही छात्रों को निवास, भोजन, वस्त्र आदि पर कुछ व्यय नहीं करना पड़ता था। भोजन के लिए छात्र भिक्षाटन करते थे विद्यार्थियों द्वारा भिक्षाटन एक सम्मानित प्रथा थी तथा गृहस्थ अपना परम सौभाग्य समझता था कि कोई उसके घर भिक्षाटन के लिए आए।

दंड व्यवस्था !- छात्र गुरुकुल में रहकर अनुशासन का पालन करते थे इसलिए अनुशासनहीनता लगभग न के बराबर थी. शारीरिक दण्ड वर्जित था किन्तु छात्र यदि कोई गलती करता तो उसे हल्के शारीरिक दण्ड दिये जाते थे। समझाना, डांटना, उपदेश, उपवास, पतली छड़ी

कक्षा नायकी पद्धति !- प्राचीन भारतीय शिक्षा की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यवस्था कक्षा नायकीय पद्धति थी इसमें उच्च कक्षाओं के बुद्धिमान छात्र गुरु के शिक्षण कार्य में सहायता देते थे इस पद्धति के दो लाभ थे — पितृ आचार्य कहा जाता था।

1. शिक्षण का कार्य अधिकांश कक्षाओं में चलता रहता था
2. कक्षा नायक कुछ समय के बाद शिक्षण कार्य में प्रशिक्षित हो जाते थे।

समापवर्तन !- शिक्षा समाप्ति के पश्चात घर लौटने से पूर्व छात्रों को गुरु के द्वारा समावर्तन उपदेश दिये जाते थे गुरु छात्र को सत्य बोलने धर्म आचरण करने, स्वाध्याय रहने, दान का दान करने, माता-पिता आचार्य तथा अतिथि का सत्कार करने, निषेध कर्म करने आदि का उपदेश देते हुए कहते थे कि यही वेद और उपनिषद् का सार है। तत्पश्चात् आचार्य छात्रों को विद्वानों की सभा में ले जाते थे जहाँ छात्र विद्वानों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देकर अपने श्रम का परिचय देते थे। अंत में गुरु दक्षिणा देते थे।

(हाशिये पर: घर लौटने से पूर्व — 25 वर्ष की आयु — ब्रह्मचर्य वस्त्र पहन कर — गुरु उसे मधुपर्क देता था फिर समावर्तन उपदेश)

वैदकालीन स्त्री शिक्षा !- वेदो में स्त्री जाति को पुरुष जाति का पूरक माना जाता है पत्नी

Other Educational Arrangements
① Women Education
② Military Ed.
③ Medical Edⁿ.

Centre — तक्षशिला, मिथिला, पाटलिपुत्र, कन्नौज, कल्याणी, तन्जौर ..

को अर्द्धांगनी से सम्बोधित किया गया है वैदकालीन में नारी शिक्षा को पर्याप्त महत्व दिया गया है आधिकांशतः उस समय स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने की समान सुविधाए नहीं थी वैदिककाल में स्त्री-पुरुष शिक्षा में कोई भेदभाव नहीं था परन्तु पुरुषो की अपेक्षा स्त्रियों को समान सुविधाए उपलब्ध नहीं थी।

गुरुकुल :- गुरुकुल शिक्षा प्रणाली भारत की प्राचीन शिक्षा की संकल्पना है प्राचीन भारत में यह वैदिक शिक्षा पनपी उस काल में उच्च शिक्षा के बहुत से केन्द्र घने जंगलो के बीच पर्वतो की गुफाओ में ऋषि मुनि के आश्रमों के रूप में पाये जाते थे इन आश्रमो में सैकड़ो विद्यार्थी वेद तथा शास्त्रो की शिक्षा प्राप्त करते थे भारतीय संस्कृति के दृष्टिकोण को ही गुरुकुलीन शिक्षा ने अपनाया उसमें आत्मज्ञान तथा आत्मा की परिपूर्णता सर्वप्रमुख है।

अपराविद्या की अवहेलना नहीं कि जाती थी परन्तु पराविद्या पर अधिक जोर दिया जाता था पराविद्या, आत्मविद्या तथा आत्मज्ञान को ही विशेष महत्व दिया जाता था।

वैदकालीन शिक्षा के गुण :-

1) निशुल्क शिक्षा व्यवस्था
2) सतचरित्रता का विकास
3) गुरु शिष्य मधुर सम्बन्ध
4) नागरिक उत्तरदायित्व का विकास
5) आत्मनिर्भरता की भावना
6) आत्माअनुशासन
7) शिक्षा के व्यवहारिक पक्ष पर ध्यान
8) प्राकृतिक वातावरण में शिक्षण कार्य
9) बहुमुखी प्रतिभा का विकास
10) शिक्षा की प्रतिबंध रहित व्यवस्था
11) नैतिक विकास
12) सामाजिक कर्तव्यों का पालन
13) व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास
14) स्वाध्याय पर बल
15) छात्रों का सरल जीवन

वैदकालीन शिक्षा के दोष :-

1) धर्म को अत्याधिक महत्व
2) शिक्षा पर राज्यों का उत्तरदायित्व नहीं
3) छात्र लंबे समय तक माता-पिता से दूर रहते थे
4) स्त्री शिक्षा की उपेक्षा
5) शूद्रों को शिक्षा से वंचित रखा गया
6) लिखित पुस्तकों का अभाव
7) शिक्षा किसी विशेष वर्ग के द्वारा प्रदान करना

Scanned with OKEN Scanner

8) रटने पर विशेष बल
9) आय के अनिश्चित स्त्रोत एवं भिक्षाटन
10) कठोर अनुशासन
11) लोक भाषाओं की उपेक्षा
12) सांसारिक कर्तव्यों की उपेक्षा
13) शारीरिक श्रम के प्रति हेय दृष्टि
14) परीक्षाओं का अभाव
15) पाठ्यक्रम में एकरूपता का अभाव
16) जनसाधारण की शिक्षा की उपेक्षा

वैदकालीन शिक्षा की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता :-

1) आदर्शवादिता
2) छात्रों का सरल जीवन
3) शान्त वातावरण
4) शिक्षण विधियां व सिद्धान्त
5) अनुशासन
6) गुरु शिष्य सम्बन्ध
7) सच्चरित्रा व नैतिक शिक्षा
8) विद्यार्थीयों का सर्वांगीण विकास
9) पाठ्यक्रम / अध्ययन के विषय

Dr.Anu kumari
Department of history
Semester _5mjc_8
Thank you

Scanned with OKEN Scanner